आठ मार्च : हम औरतों का त्यौहार

कमला भसीन

आठ मार्च, यानी अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आपको शुभकामनाएं।

हम सब औरतों को हमारा अपना दिन यानी आठ मार्च मुबारक।

चलो, कम से कम एक दिन तो हम औरतों का हुआ। पर आठ मार्च का नारा पता है क्या है ? आठ मार्च का एक नारा है—

आठ मार्च का है यह नारा
साल का हर दिन हो हमारा

बात बिलकुल ठीक है। सिर्फ़ एक दिन अपना बना लेना काफ़ी नहीं है। औरतों को तो हर दिन अपना बनाना होगा। विकास की तरफ़, आज़ादी की तरफ़ हर दिन कदम बढ़ाने होंगे। हर दिन मांग करनी होगी बराबरी की, न्याय की, खुशहाली की।

धीरे-धीरे आठ मार्च दुनिया भर में औरतों के दिन के रूप में मनाया जाने लगा है। दुनिया के हर देश में आठ मार्च को औरतें व कई जगहों पर औरतें व मर्द इकट्ठे महिला दिवस मनाते हैं। आठ मार्च एक नया त्यौहार बन गया है। नये जमाने का नया त्यौहार। ठीक वैसे ही जैसे हमारे देश में 15 अगस्त और 26 जनवरी त्यौहार बन चुके हैं। हम सब आज़ादी के इन दिनों को गांव-गांव, शहर-शहर में मनाने लगे हैं।

आठ मार्च जैसा एक और दिन जो पूरी दुनिया में मनाया जाता है वह है मज़दूरों का दिन जो 1 मई को मनाया जाता है। 1 मई को पूरी दुनिया के मेहनतकश औरतें और मर्द मज़दूर एकता बढ़ाने की क़समें खाते हैं, दुनिया भर में शोषण ख़त्म करने के वादे करते हैं। मज़दूरों का एक बहुत सुंदर नारा है जो मैं यहां सुनाना चाहती हूं—

हम मेहनतकश जगवालों से जब अपना हिस्सा मांगेंगे
एक खेत नहीं, एक देश नहीं, हम सारी दुनिया मांगेंगे

पूरी दुनिया में जब मज़दूरों का दिन या औरतों का दिन मनाया जाता है तो एक बात जो साफ़ होती है वह है कि दुनिया भर में ही औरतों और मज़दूरों का शोषण होता है, उन पर जुल्म होते हैं, उनके हक़ मारे जाते हैं, उनके साथ न्याय नहीं होता। इस शोषण और अन्याय की शक्ल और तरीक़े अलग-अलग देश में अलग-अलग हो सकते हैं। इस शोषण की मात्रा अलग-अलग हो सकती है पर शोषण और अन्याय अभी भी हर जगह है। समस्याएं हर देश में हैं।

पूरी दुनिया में जब हम महिला दिवस और मज़दूर दिवस मनाते हैं तो हम हर देश के मज़दूरों और औरतों के साथ जुड़ जाते हैं। एक सी आवाज़ जब हर जगह से उठती है तो उस आवाज़ की ताकत बढ़ जाती है। उस आवाज़ को उठाने वालों की ताक़त और हिम्मत बढ़ जाती है। उम्मीद भी बढ़ जाती है। लगता है अगर पूरी दुनिया में एक सी आवाजें उठ रही हैं तो ज़रूर कुछ बदलेगा।

इन नये त्यौहारों का एक मज़ा और है। महिला दिवस, मज़दूर दिवस ऐसे त्यौहार हैं जो किसी ख़ास जाति, धर्म और देश के साथ नहीं जुड़े। महिला दिवस किसी तबके या वर्ग के साथ भी नहीं जुड़ा। इसे हर जाति, हर धर्म, हर देश के लोग मनाते हैं। ये त्यौहार जाति, धर्म, देश, विचारधारा सब बंधनों को तोड़ते हैं। ये एक नई मानवता को जन्म देते हैं। नये रिश्ते बनाते हैं। पूरी दुनिया को ये एक परिवार सा बना देते हैं।

आठ मार्च

नाचें और गाएं खुशियां मनाएं
है दिन अपना
आओ बहनो, मिल के मनाएं
हम दिन अपना

है यह आठ मार्च का नारा
खुशियों पे हक़ है हमारा

है यह आठ मार्च का नारा
होगा शोषण अब ना हमारा

है यह आठ मार्च का नारा
जायदाद पे हक़ हो हमारा

है यह आठ मार्च का नारा
हो बहनों में बहनचारा

है यह आठ मार्च का नारा
बुलंद होगा अपना सितारा

नारी का है यह भी नारा
जल्दी राज करे सर्वहारा

सारी दुनिया दिन यह मनाती
नारी संघर्ष के गीत है गाती

पांच साल पहले आठ मार्च के दिन मैं इटली देश की राजधानी रोम में थी। पता लगा कि रोम की औरतें अपना दिन मना रही हैं। मुझे किसी न्योते की ज़रूरत नहीं थी क्योंकि आठ मार्च अगर उनका दिन था तो मेरा भी था, हर औरत का था। मैं जब आठ मार्च के जुलूस में पहुंची तो हैरान रह गई। कितना बड़ा जुलूस था। पचास हज़ार के लगभग औरतें थीं। जुलूस का अंत नहीं दिखता था। अपने-अपने झंडे और बैनर लिए, अपने-अपने नारे लगातीं, अलग-अलग संस्थाओं, समूहों की औरतें चली जा रही थीं। पूरा शहर उनके नारों से गूंज रहा था। मेरा दिल खुशी से फूला नहीं समा रहा था। इस जुलूस में शामिल हर औरत मुझे अपनी साथिन लग रही थी। मैं सोच रही थी कि दिल्ली में भी अगर हज़ारों औरतें आठ मार्च को इकट्ठी हों तो कितना मज़ा रहे।

दिल्ली में आठ मार्च हर साल मनाया जाता है पर अभी पचास हज़ार औरतें जुलूस में नहीं आतीं। आएंगी, धीरे-धीरे ज़रूर पचास हज़ार आएंगी।

इस साल आठ मार्च को दिल्ली के जुलूस में हज़ार, दो हज़ार स्त्रियां और पुरुष थे। खूब जोश था, खूब उमंग थी। नारे लग रहे थे, गाने गाए जा रहे थे। जुलूस ने संसद भवन के चारों तरफ हाथ पकड़ कर घेरा बनाया। प्रधान मंत्री श्री वी०पी० सिंह को इस जुलूस ने अपनी मांगें दीं। इस जुलूस में शामिल हर औरत ने शपथ खाई। वह शपथ थी—

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर हम भारतीय महिलाएं शपथ लेती हैं कि हम समानता, न्याय व शोषण से मुक्ति के लिए एकजुट होकर संघर्ष करेंगी।

हम प्रतिज्ञा करती हैं कि हम स्त्रियों के अधिकारों की रक्षा करेंगी और सभी प्रकार के साम्प्रदायिक, जातिवादी, कट्टरपन्थी तथा अन्य विघटनकारी शक्तियों का सामना करेंगी।

हम शपथ लेती हैं कि हम स्त्री-पुरुष व अमीर-गरीब के बीच समानता स्थापित करके अपनी मानवीय क्षमता समाज के सामूहिक विकास के लिए समर्पित करेंगी।

एक साथ खाई इस शपथ ने हम सैंकड़ों लोगों को जोड़ा, हमें संघर्ष के लिए झकझोरा, हमें चेतन होने को ललकारा।

ऐसे ही छोटे बड़े जुलूस अन्य शहरों, गांवों और बस्तियों में निकले थे। ये जुलूस हमें उन औरतों के साथ भी जोड़ते हैं जो अभी इन जुलूसों में शामिल नहीं हो पातीं।

इस बार महिला दिवस पर मैंने एक नया गाना लिखा—बालिका पर। 1990 हमारे देश में और हमारे छः पड़ौसी देशों में (पाकिस्तान, बांगलादेश, नेपाल, श्रीलंका, मालद्वीप व भूटान) बालिका वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है। इस गाने में बेटी के पैदा होने का जश्न मनाया जा रहा है, बेटी को शक्ति, आज़ादी, उल्लास दिया जा रहा है।

महिला दिवस के बारे में तीन गाने और इस अंक में दे रहे हैं, और दे रहे हैं बहुत से नारे।

अगर आपने कभी नारा नहीं लगाया तो ज़रा लगाकर देखो। बहुत ही मज़ा आता है। पर नारा अकेले तो नहीं लगाया जा सकता। उसके लिए तो और औरतों के साथ मिलना पड़ेगा। किसी संगठन, समूह, प्रौढ़ शिक्षा केंद्र में शामिल होना पड़ेगा। तो इस महिला दिवस के मौके पर क्यों न हम एक शपथ लें—हम सब एक दूसरे को सहारा देंगी, एक दूसरे की शक्ति बढ़ाएंगी और शक्ति बढ़ाने के लिए इकट्ठा होंगी, छोटे-बड़े समूह बनाएंगी। □